SRIMAD BHAGAVAD-GITA

(English & Hindi Translation with Sanskrit text)

श्रीमद्भगवद्गीता

संस्कृत मूल एवं हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद

H Sa2G / KRU

GOVERNMENT OF INDIA
Central Archaeological Library
Archaeological Survey of India
JANPATH, NEW DELHI

Accession No. 279
Call No. H-Sa2G KRU

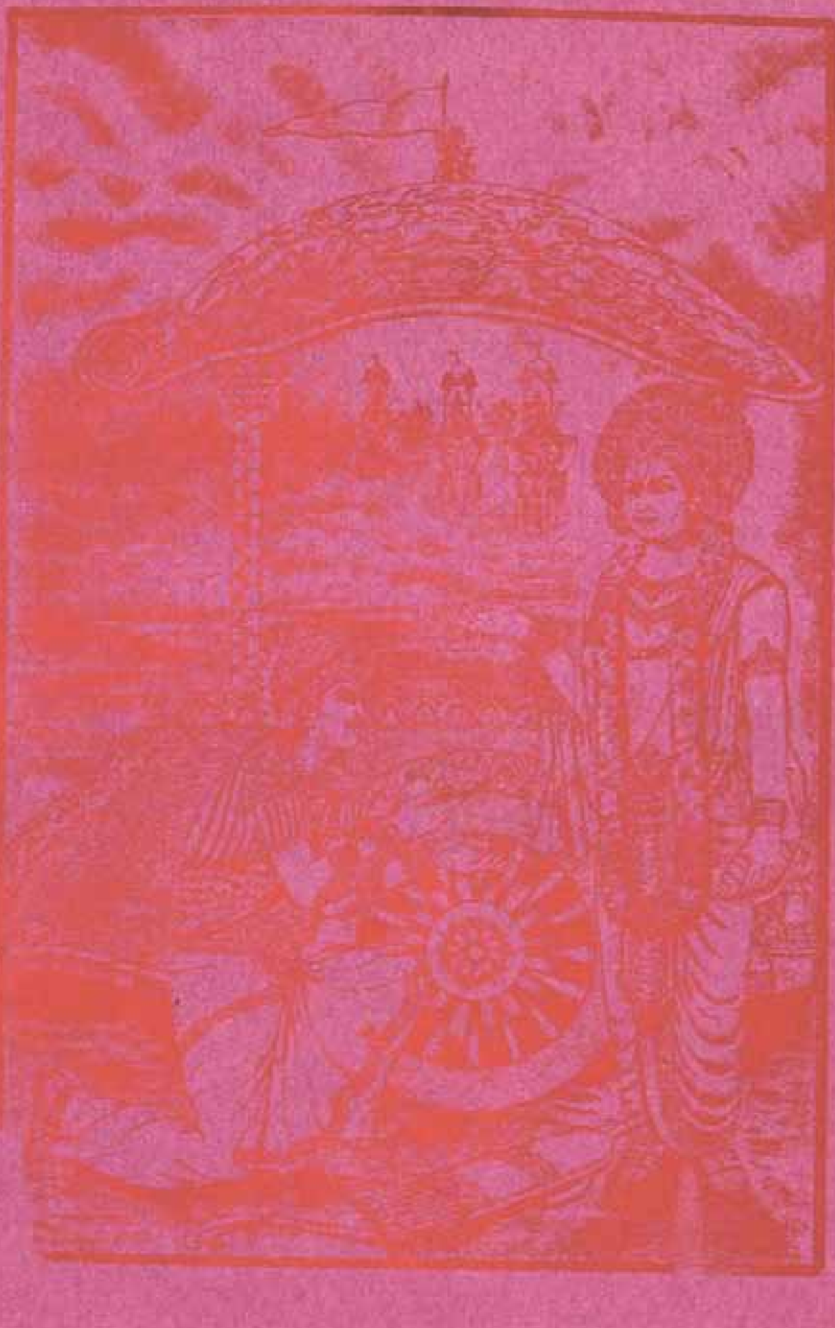

2 7 9

Srimad Bhagavad Gita

★ Sanskrit Text
★ Hindi Translation and
★ English Translation

श्रीमद्भगवद्गीता

संस्कृत मूल पाठ
हिन्दी अनुवाद
एवं अंग्रेज़ी अनुवाद

सम्पादक :
अशोक कौशिक

श्रीमद्भगवद् गीता
(संस्कृत, हिन्दी एवं अंग्रेज़ी)

Srimad Bhagavad Gita
(Sanskrit, Hindi & English)

CENTRAL ARCHAEOLOGICAL LIBRARY New Delhi
279
H Sa2G / Kau

सम्पादक :
अशोक कौशिक

Editor :
Ashok Kaushik

©Star Publication 1993

ISBN 81-7144-033-9

Publishers :

STAR PUBLICATIONS PVT. LTD.
4/5, Asaf Ali Road,
NEW DELHI-110 002

First edtion 1993
Second edition 1994
Third edition 1994

Price : Rs. 350.00 (in India)
$ 39.95 (abroad)

sole distributors for India :
HINDI BOOK CENTRE
Asaf Ali Road,
NEW DELHI-110 002

Photo-Typesetting by PULLSHOPPE, NEW DELHI-110 002 Ph. : 730502
and print ed at PRINT ART. Naraina-I, New Delhi

CENTRAL ARCHAEOLOGICAL LIBRARY
New Delhi.

Recd. from Aalkar Books, Bill No. 776 dt. 23/3/2001 Price 350/-

।। भूमिका ।।

"श्रीमद्भगवत् गीता" महाभारत के भीष्म पर्व का अंग है। भीष्म पर्व में ही गीता को सर्वशास्त्रमयी कहा गया है। महाभारतकार का अभिप्राय है कि गीता में सर्वशास्त्रों का निष्कर्ष निहित है। कुछ लोगों का तो यहां तक कहना है कि गीता में वेदों का भी सार निहित है, किन्तु यह प्रमाण पुष्ट नहीं है। अतः गीता के पाठकों को गीता के स्वतन्त्र ग्रन्थ होने और इसमें वेदों का सार निहित होने की भ्रान्ति अपने मन से निकाल देनी चाहिये। भीष्म पर्व में गीता के महत्व को बतलाते हुए यह भी कहा गया है कि जिसने गीता का सम्यक् अध्ययन कर लिया, उसे अन्य शास्त्रों के पचड़े में पड़ने की फिर आवश्यकता नहीं होती। बुद्धिमान् एवं विद्वान् पाठक इस कथन पर स्वयं ही विचार कर अपना निष्कर्ष निष्पन्न करें तो उपयुक्त होगा।

गीता में भक्ति, ज्ञान और कर्म विषयों पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। अतः जो श्रद्धालु गीता को केवल कर्मयोग अथवा भक्तियोग किं वा ज्ञानयोग का ग्रंथ मानते हैं, यह उनका अपना-अपना विचार हो सकता है। शास्त्रों में कहा गया है—'मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ना।' प्रत्येक व्यक्ति की अपनी अलग बुद्धि होती है और वह उसके आधार पर ही विचार करता है। किन्तु सत्य तो एक है। उस पर विवाद नहीं। अतः हमारा दृढ़ मत है कि गीता के सभी अध्यायों में यत्र-तत्र इन तीनों विषयों पर न्यूनाधिक प्रकाश डाला गया है तथा प्रसंगानुसार विषय-विशेष पर भी यथास्थान विस्तार से प्रकाश डाला गया है।

गीता में समता पर विशेष बल दिया गया है। संसार के आज के वातावरण में यदि गीता का इस परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया जाये तो मानवता का कल्याण होगा। गीता में मनुष्यों में समता, मनुष्य और पशुओं में समता तथा सम्पूर्ण जीवों में समता का वर्णन उपलब्ध है। इस प्रसंग में गीता के छठे अध्याय का नवां श्लोक, पांचवें अध्याय का अठारहवां श्लोक तथा छठे अध्याय का बत्तीसवां श्लोक विशेष द्रष्टव्य हैं।

जीव की क्या गति है ? आज का मानव इस विषय पर अधिक चिन्तित दिखाई देता है यद्यपि सामान्य मनुष्य यह भली भांति जानता है कि जो जिस प्रकार के कर्म करेगा, वह उसी प्रकार का फल भोगेगा। यही सामान्य गति है। तदपि वह इस को जानता हुआ भी अपने

कर्मों की गति को बदलता नहीं, अतः दुःख ही अधिक भोगता है। गीता में जीवों के गुण एवं कर्मानुसार उनकी उत्तम, मध्यम और कनिष्ठ, ये तीन गतियां बतलायी गयी हैं। कर्म योग तथा सांख्य योग की दृष्टि से सकाम भाव से विहित कर्म एवं उपासना करने वालों की गति तथा सामान्य भाव से सभी प्राणियों की गति का भी इसमें यथास्थान वर्णन किया गया है। इसी प्रकार सत्व-गुणी, रजोगुणी तथा तमोगुणी प्राणियों की गति का इसमें उल्लेख है।

रचनाकाल से ही गीता जन-जीवन को उद्प्राणित करती आई है। आज का त्रस्त मानव भी गीता की ही शरण में जाने का विचार तो करता ही है, किन्तु कितना जा पाता है, यह उसके कर्मों की गति पर निर्भर करता है।

विश्व की सभी प्रमुख भाषाओं में गीता का अनुवाद प्रकाशित हो चुका है। इसे विश्वमान्य ग्रन्थ माना जाता है। कुछ अतिवादी जन विभिन्न परकीय सम्प्रदायों के धर्मग्रन्थों से इसकी तुलना करते हैं। यह उनकी मन्दमतिता है। क्योंकि जिन ग्रन्थों के साथ इसकी तुलना की जाती है, वे दो सहस्र वर्ष से अधिक प्राचीन नहीं हैं, जबकि गीता का रचनाकाल कम से कम पांच सहस्र वर्ष पूर्व तो माना ही जाता है। अतः पूर्व-ग्रन्थ की पर-ग्रन्थ के साथ तुलना करना अपनी मन्दमति का ही प्रदर्शन करना कहा जा सकता है। इस दुष्प्रयास का प्रत्याख्यान करना नितान्त आवश्यक और अनिवार्य है।

जिस प्रकार गीता का अनेक भाषाओं में अनुवाद उपलब्ध है, उसी प्रकार इसकी अनेक टीकायें भी उपलब्ध हैं। गीता के प्रस्तुत संस्करण के प्रणयन में यदि उन सभी को नहीं तो उनमें से अधिकांश को दृष्टि में रखा गया है। उनमें से जो नवनीत उपलब्ध हो पाया है उसे यहां प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। हां, त्रुटियों का उत्तरदायित्व अवश्य हम पर होगा। तदपि हमें आशा ही नहीं अपितु विश्वास है कि हिन्दी और अंग्रेज़ी के पाठक इससे अवश्य लाभान्वित होंगे। इस भावना के साथ यह आपको समर्पित है—

अक्षय तृतीया, सं० २०५० —अशोक कौशिक
७-एफ़, कमला नगर, (सम्पादक)
दिल्ली-११० ००७

INTRODUCTION

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या, द्रविड़म् त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव।।

Thou art Mother, thou art Father, thou art kinsman, thou art friend, thou art knowledge, thou art wealth; thou art my all, O'Lord of Lords.

'Srimad Bhagavad Gita' is just not a holy book, it has alsc gained a prominent place in literature of the world. It contains divine words emanating from the lips of Lord Krishna. This great epic is an eloquent proof of the observation. As a scripture, this Book embodies the supreme spiritual mystery and secrets. Its style is so simple and elegant that with a little study one can easily follow the structure of its words, yet the thoughts behind those words are so deep and abstruse that even for life time, constant study of this Book may not show an end of it.

'The Bhagavad Gita' is an unfathomable ocean of wisdom. It is a bottomless sea containing endless strate of meanings. Just as a diver diving deep in the sea lays his hands on precious gems, similarly diving deeper and deeper into the secrets of this Book, the seeker goes on discovering more and more piles of extraodrdinary gems of thoughts and ideas.

'The Bhagavad Gita' is a part of the Mahabharata, but even then it has its own identity, which has made it more prominent than the Mahabharata. It may look to be just a narration of the happenings of the war between Kauravas and Pandavas, but it is the philosophy of life, expressed from the lips of Lord Krishna, addressed to the warrior Arjuna, defining following ideas :

(i) Facing your enemies in a war is an asupicious and especial duty;

(ii) The Lord alone is to be worshipped, and that only by doings one's own duties. Any other worship or duty should be abandoned.

(iii) Devotion to the Lord is the mean to which all the rest is subservient;

(iv) The Lord is far different from the whole world and everything is under His control. He is the Supreme being, perfect in every excellence.

(v) The human being is obliged to perform his duties without hoping for the fruits which he may get out of his performance.

'Srimad Bhagavad Gita' has been translated into several languages, and each translation has been reviewed and commented in different ways. But this edition of Bhagavad Gita has its own distinction. It contains the original sanskrit text (shloka by shloka) with its translation into Hindi as also in English. We hope that this edition will enlighton not only those readers who read it from religious view point, but also to those who want to study this great literary work.

It has been brought out in comparatively bolder type so that it can be easily read by readers of all ages.

New Delhi.
August 11, 1993
(Birth day of Lord Krishna)

–publishers.

श्रीमद्भगवद्गीता

संस्कृत, हिन्दी एवं अंग्रेज़ी

प्रथमोऽध्यायः

श्रीभगवान् ने अर्जुन को निमित्त बनाकर समस्त विश्व को श्री गीता के रूप में जो महान् उपदेश दिया है, यह अध्याय उसकी अवतारणा के रूप में है। इसमें दोनों ओर के प्रधान-प्रधान योद्धाओं के नाम गिनाये जाने के बाद मुख्यतया अर्जुन के बन्धुनाश की आशंका से उत्पन्न मोहजनित विषाद का वर्णन है। इसलिये इसका नाम 'अर्जुन-विषाद-योग' रखा गया है।

प्रसंग — पाण्डवों के राजसूय यज्ञ में उनके महान् ऐश्वर्य को देखकर दुर्योधन के मन में बड़ी भारी जलन पैदा हो गयी और उन्होंने शकुनि आदि की सम्मति से जुआ खेलने के लिए युधिष्ठिर को बुलाया और छल से उनको हराकर उनका सर्वस्व हर लिया। अन्त में यह निश्चय हुआ कि युधिष्ठिरादि पाँचों भाई द्रौपदी-सहित बारह वर्ष में वन में रहें और एक साल छिपकर रहें; इस प्रकार तेरह वर्ष तक समस्त राज्य पर दुर्योधन का आधिपत्य रहे और पाण्डवों के एक साल के अज्ञातवास का भेद न खुल जाय तो तेरह वर्ष के बाद पाण्डवों का राज्य उन्हें लौटा दिया जाय। इस निर्णय के अनुसार तेरह साल बिताने के बाद जब पाण्डवों ने अपना राज्य वापस माँगा तब दुर्योधन ने साफ इन्कार कर दिया। तब दोनों ओर से युद्ध की तैयारी होने लगी।

भगवान् श्रीकृष्ण को रण-निमन्त्रण देने के लिये दुर्योधन और अर्जुन द्वारका पहुँचे। —भगवान् अपने भवन में सो रहे थे। दुर्योधन उनके सिरहाने एक मूल्यवान् आसन पर जा बैठे और अर्जुन दोनों हाथ जोड़कर नम्रता के साथ उनके चरणों के सामने खड़े हो गये। जागते ही श्रीकृष्ण ने अपने सामने अर्जुन को देखा और फिर पीछे की ओर मुड़कर देखने पर सिरहाने की ओर बैठे हुए दुर्योधन दीख पड़े। भगवान् श्रीकृष्ण ने दोनों का स्वागत-सत्कार किया और उनके आने का कारण पूछा। तब दुर्योधन ने कहा—'मुझमें और अर्जुन में आपका एक-सा ही प्रेम है और हम दोनों ही आपके संबंधी हैं; परंतु आपके पास पहले मैं आया हूँ, सारे भूमण्डल में आज आप ही सब सज्जनों में श्रेष्ठ और सम्माननीय हैं, इसलिये आपको मेरी ही सहायता करनी चाहिये।' भगवान् ने कहा—'निःसन्देह, आप पहले आये हैं; परंतु मैंने पहले अर्जुन को ही देखा है। मैं दो प्रकार से सहायता करूँगा। एक ओर मेरी अत्यन्त बलशालिनी नारायणी-सेना रहेगी और दूसरी ओर मैं, युद्ध न करने का प्रण करके, अकेला रहूँगा; मैं शस्त्र का प्रयोग नहीं करूँगा। अर्जुन! धर्मानुसार पहले तुम्हारी इच्छा पूर्ण होनी चाहिये; अतएव दोनों में से जिसे पसंद करो, माँग लो!' अर्जुन ने शत्रुनाशन नारायण भगवान् श्रीकृष्ण को माँग लिया। तब दुर्योधन ने उनकी नारायणी-सेना माँग ली।

भगवान् ने अर्जुन से पूछा—'अर्जुन! जब मैं युद्ध ही नहीं करूँगा, तब तुमने क्या समझकर नारायणी-सेना को छोड़ दिया और मुझ को स्वीकार लिया?' अर्जुन ने कहा—'भगवन्! आप अकेले ही सबका नाश करने में समर्थ हैं, तब मैं सेना लेकर क्या करता?' भक्तवत्सल भगवान् ने अर्जुन के इच्छानुसार

उनके रथ के घोड़े हाँकने का काम स्वीकार किया। इसी प्रसंग के अनुसार भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन के सारथि बने और युद्धारम्भ के समय कुरुक्षेत्र में उन्हें गीता का दिव्य उपदेश सुनाया। अस्तु।

जिस समय दोनों ओर की सेना एकत्र हो चुकी थी, उस समय भगवान् श्रीकृष्ण ने स्वयं हस्तिनापुर जाकर हर तरह से दुर्योधन को समझाने की चेष्टा की; परंतु उन्होंने स्पष्ट कह दिया—'मेरे जीते-जी पाण्डव कदापि राज्य नहीं पा सकते, यहाँ तक कि सूई की नोक भर जमीन मैं पाण्डवों को नहीं दूँगा।' तब अपना न्यायोचित स्वत्व प्राप्त करने के लिये पाण्डवों ने धर्म समझकर युद्ध के लिये निश्चय कर लिया।

जब दोनों ओर से युद्ध की पूरी तैयारी हो गयी, तब भगवान् वेदव्यास जी ने धृतराष्ट्र के समीप आकर उनसे कहा—'ये सञ्जय तुम्हें युद्ध का सब वृत्तान्त सुनावेंगे। युद्ध की समस्त घटनावलियों को ये प्रत्यक्ष देख, सुन और जान सकेंगे।

महर्षि वेदव्यास जी के चले जाने के बाद धृतराष्ट्र के पूछने पर सञ्जय उन्हें पृथ्वी के विभिन्न द्वीपों का वृत्तान्त सुनाते रहे, उसी में उन्होंने भारत वर्ष का भी वर्णन किया। तदनन्तर जब कौरव-पाण्डवों का युद्ध आरम्भ हो गया और लगातार दस दिनों तक युद्ध होने पर पितामह भीष्म रणभूमि में रथ से गिरा दिये गये, तब सञ्जय ने धृतराष्ट्र के पास आकर उन्हें अकस्मात् भीष्म के मारे जाने का समाचार सुनाया (महा० भीष्म० १३)। उसे सुनकर धृतराष्ट्र को बड़ा ही दुःख हुआ और युद्ध की सारी बातें विस्तार पूर्वक सुनाने के लिये उन्होंने सञ्जय से कहा, तब सञ्जय ने दोनों ओर की सेनाओं की व्यूह-रचना आदि का वर्णन किया। इसके बाद धृतराष्ट्र ने विशेष विस्तार के साथ आरम्भ से अब तक की पूरी घटनाएँ जानने के लिए सञ्जय से प्रश्न किया। यहीं से श्रीमद्भगवद्गीता का पहला अध्याय आरम्भ होता है। महाभारत, भीष्म पर्व में यह पचीसवाँ अध्याय है। इसके आरम्भ में धृतराष्ट्र सञ्जय से प्रश्न करते हैं—

When all efforts of preventing the war between Kauravas and Pandavas failed and subsequently both sides had thoroughly prepared to start the battle in Kuruksetra, the sage Vedavyasa asked Dhratrastra, the King and the father of Duryodhana, if he would like to see the terrible carnage sothat he could make a gift of transcendent vision (as King Dhratrastra was visually handicaped otherwise), Dhratrastra replied : *"O Mahrishi. I have no desire to see with my own eyes this slaughter of my own family, but would like to hear all the events of the battle."* Thereupon Vedavyasa conferred the gift of divine vision on Sanjaya, a truusty counsellor of Dhratrastra, and told that Sanjaya would describe all the happenings of the war even while sitting with King Dhratrastra.

The text of *SRIMAD BHAGAVAD GITA* is mostly based upon questions and anwers between King Dhratrastra and Sanjay, and between Arjuna and Lord Krishna.

FIRST chapter thus starts with Dhratrastra's question to Sanjaya in the followng terms :-

धृतराष्ट्र उवाच

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः।
मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय।।१।।

धृतराष्ट्र बोले—हे सञ्जय! धर्मभूमि कुरुक्षेत्र में एकत्रित, युद्ध की इच्छा वाले मेरे और पाण्डु के पुत्रों ने क्या किया? ।। १ ।।

Dhratrastra said: Sañjaya, gathered on the sacred soil of Kuruksetra, eager to fight, what did my children and the children of Pandu do? (1)

प्रसंग – धृतराष्ट्र के पूछने पर सञ्जय कहते हैं—

सञ्जय उवाच

दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा।
आचार्यमुपसंगम्य राजा वचनमब्रवीत्।।२।।

सञ्जय बोले—उस समय राजा दुर्योधन ने व्यूह रचनायुक्त पाण्डवों की सेना को देखकर और द्रोणाचार्य के पास जाकर यह वचन कहा ।। २ ।।

Sañjaya said: At that time, seeing the army of the Pandavas drawn up for battle and approaching Dronacarya King Duryodhana spoke these words: (2)

प्रसंग — द्रोणाचार्य के पास जाकर दुर्योधन ने जो कुछ कहा, अब उसे बतलाते हैं—

पश्यैतां पाण्डुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम्।
व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता।। ३।।

हे आचार्य! आपके बुद्धिमान् शिष्य द्रुपदपुत्र धृष्टद्युम्न द्वारा व्यूहाकार खड़ी की हुई पाण्डु पुत्रों की इस बड़ी भारी सेना को देखिये ।। ३ ।।

Behold, Master, the mighty army of the sons of Pandu arrayed for battle by your talented pupil, Dhrstadyumna, son of Drupada. (3)

प्रसंग — पाण्डव-सेनाकी व्यूहरचना दिखलाकर अब दुर्योधन तीन श्लोकों द्वारा पाण्डव-सेना के प्रमुख महारथियों के नाम बतलाते हैं—

अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि।
युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथः।। ४।।
धृष्टकेतुश्चेकितानः काशिराजश्च वीर्यवान्।
पुरुजित्कुन्तिभोजश्च शैव्यश्च नरपुंगवः।। ५।।
युधामन्युश्च विक्रान्त उत्तमौजाश्च वीर्यवान्।
सौभद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः।। ६।।

इस सेना में बड़े-बड़े धनुषों वाले तथा युद्ध में भीम और अर्जुन के समान शूरवीर सात्यकि और विराट तथा महारथी राजा द्रुपद, धृष्टकेतु और चेकितान तथा

बलवान् काशिराज, पुरुजित्, कुन्तिभोज और मनुष्यों में श्रेष्ठ शैव्य, पराक्रमी युधामन्यु तथा बलवान् उत्तमौजा, सुभद्रा पुत्र अभिमन्यु एवं द्रौपदी के पाँचों पुत्र—ये सभी महारथी हैं ।। ४-५-६ ।।

There are in this army heroes wielding mighty bows and equal in military prowess to Bhima and Arjuna—Satyaki and Virat and the Maharathi (warrior chief) Drupada; Dhrstaketu, Chekitana and the valiant King of Kasi, and Purujit, Kuntibhoja, and Saivya, the best of men and mighty Yudhamanyu, and valiant Uttamauja, Abhimanyu, the son of Subhadra, and the five sons of Draupadi,—all of them Maharathis (warrior chiefs). (4,5,6)

प्रसंग — पाण्डव-सेना के प्रधान योद्धाओं के नाम बतलाकर अब दुर्योधन आचार्य द्रोण से अपनी सेना के—प्रधान योद्धाओं को जान लेने के लिये अनुरोध करते हैं—

अस्माकं तु विशिष्टा ये तान्निबोध द्विजोत्तम।
नायका मम सैन्यस्य संज्ञार्थं तान् ब्रवीमि ते।। ७।।

हे ब्राह्मणश्रेष्ठ! अपने पक्ष में भी जो प्रधान हैं, उनको आप समझ लीजिये। आपकी जानकारी के लिये मेरी सेना के जो-जो सेनापति हैं, उनको बतलाता हूँ ।। ७ ।।

O best of Brahmanas, know them also who

are the principal warriors on our side—the generals of my army. For your information, I mention them below :— (7)

प्रसंग — अब दो श्लोकों में दुर्योधन अपने पक्ष के प्रधान वीरों के नाम बतलाते हुए अन्यान्य वीरों के सहित उनकी प्रशंसा करते हैं—

भवान् भीष्मश्च कर्णश्च कृपश्च समितिञ्जयः ।
अश्वत्थामा विकर्णश्च सौमदत्तिस्तथैव च ।। ८ ।।

आप—द्रोणाचार्य और पितामह भीष्म तथा कर्ण और संग्राम विजयी कृपाचार्य तथा वैसे ही अश्वत्थामा, विकर्ण और सोमदत्त पुत्र भूरिश्रवा ।। ८ ।।

Yourself and Bhisma and Karna and Kripa, who is ever victorious in battle; and even so Asvatthama, Vikarna and Bhurisrava (the son of Somadatta); (8)

अन्ये च बहवः शूरा मदर्थे त्यक्तजीविताः ।
नानाशस्त्रप्रहरणाः सर्वे युद्धविशारदाः ।। ९ ।।

और भी मेरे लिये जीवन की आशा त्याग देने वाले बहुत-से शूरवीर अनेक प्रकार के शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित और सब-के-सब युद्ध में चतुर हैं ।। ९ ।।

And there are many other heroes, equipped with various weapons and missiles, who have